पार्श्व गायक मुहम्मद रफी का फिल्म जगत में योगदान

डा0 आरती श्योकंद

एक ही गायक पैंतीस वर्षो के लम्बे अन्तराल तक चित्रपट संगीत के आकाश में अपनी आवाज के जादू के कारण ध्रुव तारे की तरह जगमगाता रहे तो उसे जादूगर कहा जाना चाहिये। स्व. मुहम्मद रफी ऐसे ही महान जादूगर रहे हैं। भारतीय चित्रपट संगीत की इस महान परम्परा के महान गायक का जन्म पंजाबी सूबे के अमृतसर के जिले में कोटला सुल्तानपुर नामक गॉव में हुआ। 4 दिसम्बर, 1924 को इस महान गायक ने जन्म लिया। इनके पिता जी का नाम हाजी अली मुहम्मद था। ये अपने भाई–बहनों में सबसे छोटे थे। ये ऐसे महान गायक थे जो हमेशा परमात्मा से डरते थे, असत्य को पाप, समझते थे और छोटे–बड़े में कोई भेद नही समझते थे, ये दूसरों के हित का ध्यान रखने वाले, कला, परिश्रम, संसार, परिवार, व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और धर्म के साथ ईमानदारी निभाने वाले व्यक्ति थे। रफी साहब के परिवार वालों को संगीत से जरा भी प्रेम नहीं था और इसी कारण वे अक्सर घरवालों की मार भी खाया करते थे लेकिन इनको हामिद मियॉ जैसे बड़े भाई मिले जिन्होंने इस चमकने वाले सूरज के सामने आये बादलों को हटा दिया और उनके इस प्रयास से इस सूर्य की चमक पूरे विश्व में फैल गई। रफी साहब को बड़े गुलाम अली खॉ साहब के भाई स्व. बरकत अली खॉ से सीखने का मौका मिला। इन्होंने फिरोज निज़ामी से भी छोटी उम्र में ही सीखा और फिरोज़ निजामी के मार्गदर्शन में आकाशवाणी पर एक गाना प्रस्तुत करने का इनको अवसर मिला ।

सन् 1947 में उन्होंने 'समाज को बदल डालो' और 'जुगनु नामक चित्रपटों में छोटी–छोटी भूमिकाऍ भी की। मुहम्मद रफी साहब की गायकी की विशेषताओं को शब्दों में बांधना कठिन हैं। रफी साहब की विशेषताओं को इन कागज के टुकड़ों पर समेटा नहीं जा सकता रफी साहब ने चित्रपट संगीत को अद्वितीय योगदान दिया है ।